माँगना क्या चाहिए ?

एक समृद्ध महिला अपना चित्र बनवाने एक गरीब चित्रकार के पास पहुंची. कुछ दिन बाद जब वह अपना चित्र लेने वापस पहुंची तो चित्र देखते ही मंत्रमुग्ध होकर उसे निहारती रही. इतना सौंदर्य! रंग और तूलिका का इतना विलक्षण संयोग ! वह अति प्रसन्न मुर्तिवंत उसे निहारती ही रह गई. बाद में उसने उस गरीब चित्रकार से कहा - आज तुम दिल खोलकर इस चित्र का पारितोषिक माँग लो. उस गरीब चित्रकार का दिल खुशी से फुला नहीं समाता था. उसने सोचा, कितना मांग लु ? इच्छाओं से, आकांक्षाओं से भरा गरीब मांगेगा भी तो कितना ? चित्रकार ने सोचा - सौ पौण्ड मांगू, दौ सौ पौण्ड ले लू...तीन सौ, पाँच सौ...! फिर तो उसके संकल्प हिलने लगे. उस गरीब चित्रकार ने सोचा शायद वो इतना नहीं दे सके. बाद में उसने यही निर्णय लिया कि यह ज्यादा अच्छा होगा कि पुरस्कार ही सारी उस महिला की इच्छा पर ही छोड़ दिया जाये. उसने महिला से कहा कि आपकी जो इच्छा हो ह दे दीजिये. महिला के हाथ में पर्स था. उसे कहा कि यह पर्स तुम रख लो बड़ा मूल्यवान है यहा उस गरीब चित्रकार का तो दिल ही बैठ गया. वह मन ही मन सोचने लगा की माना पर्स मुल्यवान है लेकिन मैं यह लेकर क्या करूंगा इससे अच्छा तो मुझे सौ पौण्ड ही मिल जाते. तो उसने कहा - नहीं, नहीं मैं यह पर्स लेकर क्या करूंगा, मुझे सौ पौण्ड ही दे दो तो अच्छा रहेगा. उस महिला ने एक लाख पौण्ड से भरे उस पर्स से उसके सामने ही सौ पौण्ड निकाल कर उस चित्रकार को दिये और पर्स लेकर चली गई. वह गरीब चित्रकार छाती पीठ-पीठकर रोने लगा कि "हाय कितना वहा भाग्य गंवा बैठा."

आज के मनुष्य करीब-करीब इसी हालत में है. हमारी मांगे हमारी इच्छायें कितनी साधारण, कितनी तुच्छ है. क्या हम इतने दिन हीन हो गये है कि सौ पौण्ड से ही अपनी दरिद्रता मिटाने की सोचते है ? देनेवाला तो करोड़ो, अरबों दे रहा है. मांग भी हमारी सम्राट की तरह हो जो एक बार मांग लेने के बाद फिर बार-बार न मांगना पडे.

परमात्मा ने जो हमे दिया है वह तो तिजोरी में बंद पडा है और हम है कि दो-चार कौड़ी मांग रहे है जीवन की जो बहुमूल्य सम्पदा ज्ञान, शान्ति, खुशी और आनन्द जो कि स्वयं भगवान ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर ने हमको दिया है उस पर्स को तोहम खोल देखते तक नहीं. हमें जो मिला है वह जो हम मांग रहे है, उससे तो पद्मगुणा ज्यादा है. लेकिन मांगने में हम इतने तल्लीन है कि हमें वह सम्पदा दिखाई नहीं देती है. जो हम मांगते है कि - थोड़ा बैंक बैलेंस हो जाये, सुन्दर कार और बंगले...और भी कई सांसारिक इच्छाओं की पूर्ती हो जाये लेकिन यह सभी मांगे क्षुद्र है. परमात्मा से जो हम चाहते है मांगते है, वे हमें उनसे मांगनी नहीं चाहिये थी.

जरा आँखें खोलकर अपने चारों तरफ झाँक कर देखेंगे तो आप पायेंगे कि उस प्रेम के, आनन्द के सागर परमात्मा से बिना मांगे अमूल्य अमृतानन्द, निर्मल, पावन सदा के लिये तृप्त कर देनेवाला सर्व सम्बधी का निस्वार्थ प्यार रिमझिम रिमझिम बरस रहा है. जिसे पा लेने पर, पी लेने पर और सभी माँगे चिरकाल के लिये पूर्ण हो जाती है, हमारा मन दरिद्रता से मुक्त सम्राट जैसा दादा बन जाता है कहावत भी है -

बिन मांगे मोती मिले

मांगे मिले न भीख

फिर वह मांग चाहे पैसे की हो या यश की हो, चाये प्रतिष्ठा की. मांगना ही है तो निरन्तर उसकी याद, सर्व सम्बन्धों से इसका सानिदय मांग लो फिर संसार की सभी अमूल्य प्राप्तियां भी आपके चारों ओर हाथ जोडे. दासी की तरह खडी रहेगी. यदि सर्व खजाने चाहिये तो उसकी चावी है परमात्मा. मांगना ही हो तो यह चावी मांग लो.

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com